

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जोरहाट

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, आसाम, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून का संघटक अनुसंधान संस्थान है। संस्था का अधिदेश भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों की वानिकी से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति करना, झूम-खेती, पारिस्थितिकी और जैवविविधता, प्रसारण, खेती तथा महत्वपूर्ण वन प्रजातियों की निष्पादकता का परीक्षण करना, नाशिकीटों और बीमारियों का संयुक्त प्रबंधन करना, जैव-संसाधनों का द्विपक्षीय पूर्वक्षण करना, वृक्ष प्रजातियों तथा जैव तकनीकों में आनुवंशीय सुधार करना है।

मिजोरम राज्य की राजधानी आईजल में बांस तथा बेंत पर अनुसंधान करने के लिए उच्च अनुसंधान केन्द्र भी स्थापित किया गया है जिसका संरचनात्मक विकास पूरे जोर पर है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : चेरापूँजी, मेघालय में अत्यधिक अपरदित स्थलों का सुधार [आर एफ आर आई / एस एम / 4 / 2003-2006]

उपलब्धियां : चेरापूँजी मेघालय में प्रायोगिक भूखंडों पर एलनस नेपेलेन्सिस और एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया का रोपण किया गया। एलनस नीपेलेन्सिस का जीवितता प्रतिशत 90.8 तथा एक्सबकलेन्डिया का 75.18 पाया गया। सोलह उपचार संयोजनों में पी2 डब्ल्यू ओ एम ओ एफ आई से अधिकतम वृद्धि दर दर्ज की गई जो ए. नीपेलेन्सिस में 221 से.मी. तथा ई. पापुलेनिया में 63 से.मी. पाई गई। फरवरी 2006 के दौरान प्रायोगिक भूखण्ड आग से पूरी तरह नष्ट हो गया। लक्षित प्रजातियों पर आग के प्रकोप का समाघात जानने हेतु जले हुए क्षेत्र पर रोष परियोजना अवधि के लिए तार बाढ़ कर दी गई है। प्रायः देखा गया है कि आग लगने के बाद ई. पापुलेनिया की तुलना में ए. नीपेलेन्सिस अच्छी संख्या और ऊँचाई तक उगता है।



एक्सबकलेन्डिया पापुलेनिया



एलनस नेपालेन्सिस



आग लगने के बाद ए. नेपालेन्सिस

परियोजना 2 : मेलाइना आर्बोरिया-राक्सब के खतरनाक नाशिकीट केलोपेप्ला लीयाना लेंटर के प्रबंधन के लिए पारि-अनुकूल रणनीति का विकास [आर एफ आर आई / एफ ई / 11 / 2004-2007]



उपलब्धियां : जोरहाट, आसाम तथा आस-पास के क्षेत्रों में मेलाइना आर्बोरिया पर केलोपेप्ला लीयाना की आबादी के उतार-चढ़ाव का अध्ययन किया गया। आबादी में उतार-चढ़ाव की प्रवृत्ति, अध्ययन स्थल के अजैव कारक से सहसंबंधित थी जिसमें तापमान, आपेक्षिक आर्द्रता तथा वर्षण की स्थितियों के महत्व का पता चलता है। सी. लियाना की आबादी के अजैवकीय कारकों का आकलन करने के लिए प्रतिगमन समीकरण भी विकसित किये गये।

प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रोटोकाल विकसित करने हेतु विभिन्न स्थितियों में जी. आर्बोरिया पर सी. लियाना द्वारा किये गये नुकसान का आंकलन किया गया।

कीट रोगजनक कवक ब्यूवेरिया बेसिआना को पृथक किया गया और सी. लियाना को लारवा तथा युवावस्था में मुख्य प्राकृतिक रोगजनक के रूप में पहचाना गया। बड़ी मात्रा में बीजाणु उत्पन्न करने के प्रयास में विभिन्न तत्वों का उपयोग करते हुए बी. बेसिआना का वृहत उत्पादन किया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनायें

परियोजना 1 : भारत के उत्तर-पूर्वी भाग के लिए पचौली आधारित व्यवहार्य कृषि वानिकी मॉडलों का विकास [आर एफ आर आई / सी एफ ई / 04 / 2003-2007]

स्थिति : चार विभिन्न पर्यावरणों (अर्थात: वृक्ष के नीचे आंशिक छाया, कृषि फसलों से घिरे होने पर छाया, मिस्ट चेम्बर तथा खुले वातावरण) में पचौली के वानस्पतिक प्रसार को मानकीकृत करने हेतु पौधशाला परीक्षण किये गये।

10 वृक्षोद्यान स्थलों के चयन हेतु व्यापक सर्वेक्षण किया गया। पचौली की खेती और प्रबंधन तकनीकों के विकास हेतु किसानों को खेतों में भागीदारी अनुसंधान में भाग लेने हेतु प्रेरित किया गया।

अरेका नट, अगर, गम्हारी (मेलीना आर्बोरिया) तथा बांस की विभिन्न आयु की रोपणियों के बागों में फार्म परीक्षण किये गये। फसल पर आवधिक अवलोकन रिकार्ड किये गये।

प्रारंभिक परिणामों से पता चलता है कि अरेका नट के नीचे पचौली की निष्पादकता सर्वोत्तम होती है। वर्तमान में बड़ी हुई जड़ी उत्पादकता की उपयुक्तता श्रृंखला इस प्रकार है : अरेका नट > बेम्बो > मेलीना > अगर।



स्वयं सहायता वर्ग द्वारा उगाई गई किसान पौधशाला



सुपारी बाग में पचौली को अनुरक्षित करते हुए किसान

परियोजना 2 : उत्तर-पूर्वी भारत में व्यवहार्य आर्थिक मॉडल विकसित करने के लिए वर्तमान की विभिन्न भूमि-उपयोजन पद्धतियों का मूल्यांकन [आर एफ आर आई / एससी / 06 / 2003-2008]

स्थिति : नागालैण्ड और मेघालय में विभिन्न भूमि-उपयोजन पद्धतियों का सर्वेक्षण, चयन तथा उत्पादकता डाटा का संग्रह कार्य पूरा कर लिया गया है।

रोपणियों/नकद फसलों के लागत लाभ के अनुपात की गणना कर ली गई है और मेघालय के संग्रहित मृदा नमूनों का भौतिक-रासायनिक विश्लेषण कार्य प्रगति पर है। झूम खेती के लागत लाभ (1.61) की बजाय सुनियोजित खेती (बी:सी) का लागत लाभ अनुपात (3.85) और अनानास कोमोसम का (3.66) पाया गया। नागालैण्ड राज्य में मुख्य नकदी फसलों के उत्पादकता मूल्यांकन और लाभ-लागत अनुपात से पता चलता है कि अनानास कोमोसम, मुसा पैराडाइसिका की सुनियोजित खेती की उत्पादकता तथा लाभ-लागत अनुपात (2.61) है जबकि राज्य में झूम खेती का लाभ लागत अनुपात केवल (0.23) है।



एनानास कोमोसस की रोपणी



यवस्थित खेती

परियोजना 3 : मेलीना आर्बोरिया के विभिन्न अभिलक्षणों के लिए विभिन्न कृत्तकों और सन्ततियों का स्थाईत्व परीक्षण [आर एफ आर आई / टी आई / 10 / 2003–2006]

स्थिति : चयनित कुलों के सन्तति परीक्षणों से प्राप्त डाटा से पता चलता है कि समग्र रूप से टिलाईमूरा (त्रिपुरा) की सन्तति निष्पादकता औरों से अच्छी रही जिसमें जीवितता 69%, ऊँचाई 2.9 मीटर तथा कॉलर व्यास 7.0 सेमी० पाया गया जबकि इम्फाल मनीपुर में जीवितता 62% ऊँचाई 1.4 मी० तथा कॉलर व्यास 4.4 से.मी. पाया गया। ऊँचाई तथा कॉलर व्यास में आनुवंशीय तथा पर्यावरणीय अन्तःक्रिया 0.001 स्तर की पाई गई जो ऊँचाई तथा कॉलर व्यास दोनों मामलों में महत्वपूर्ण रही। अतः लगभग तय है कि दो भिन्न स्थलों में एक ही सन्तति की निष्पादकता एक समान नहीं होगी।

चयनित कुलों की अर्द्ध-सगोत्रीय सन्ततियों के अंकुरण परीक्षण के परिणामों से पता चलता है कि आर आर आई / जीए31 का प्रतिशत सर्वोच्च था। समग्र अंकुरण केवल 26% रहा। इसको ध्यान में रखते हुए बीज जीवनक्षमता का टेट्राजोलियम परीक्षण किया गया जिससे पता चला कि कुल बीजों का क्रमशः 12% तथा 1% भाग पूर्ण या आंशिक रूप से जीवनक्षम नहीं था। सन्तति संख्या 43 सबसे अधिक (93%) जीवनक्षम पाया गया।

परियोजना 4 : डिप्टेरोकार्पस तथा रेटूसस का आनुवंशीय सुधार तथा कृत्तीय प्रसार [आर एफ आर आई / टी आई / 11 / 2004–2007]

स्थिति : विभिन्न विशेषताओं अर्थात् पादप की ऊँचाई, छाती की ऊँचाई पर व्यास शाखायें प्रस्फुटित होते समय ऊँचाई तथा छत्र-व्यास का मूल्यांकन करने के लिए देववन में चेक रोपणों सहित सन्तति निष्पादकता जानने के लिए सात सन्ततियों पर अध्ययन किया गया। डीएमपी-9, डीएमपी-2 तथा जेकेजी-2 को उत्तम पाया गया। कृत्तक प्रसार प्रोटोकाल के विकास के लिए डी. रेटूसस के तना कर्तनों से जड़े विकसित करने का कार्य जारी है।

परियोजना 5 : उत्तर-पूर्व में बाँस के स्तरीय रोपण स्टॉक के उत्पादन हेतु पौधशाला पद्धतियों का विकास [आर एफ आर आई / एस एम / 06 / 2005–2008]

स्थिति : डेन्ड्रोकैलेमस हेमिल्टोनाई की दो ग्रन्थित नालों तथा शाखा कर्तनों से प्रशाखाओं को अलग करके विभिन्न पोर्टिंग मीडिया से पॉलीपाट्स में रोपित किया गया। सात उपचार किये गये जिनमें एफ वाई एम, रेत तथा मृदा के साथ वर्मीकम्पोस्ट, वर्मीकास्टिंग (संवर्द्धन) तथा वर्मीकास्टिंग (वनीय) शामिल थे।



परियोजना 6 : संवर्धनीय पद्धतियों के जरिये विपणन योग्य नालों की उत्पादकता वृद्धि के लिए बैम्बूसा न्यूटन्स का प्रबंधन [आर एफ आर आई / टी आई / 13 / 2005–2008]

स्थिति : बाँस झुरमुटों का विरलन तथा मृदा पिण्डन किया गया। विभिन्न वृद्धि मापदण्डों का नियमित अवलोकन तथा डाटा रिकार्डिंग किया जा रहा है। आसाम के विभिन्न भागों में विभिन्न बाँस डिपुओं का बाजार सर्वेक्षण भी किया गया। भूखण्डों में उर्वरकों का अनुप्रयोग भी किया गया। नियमित अन्तरालों पर अन्य आवश्यक सांवर्धनिक संक्रियायें जारी हैं।

परियोजना 7 : आसाम में बाँस के निम्नीकरण को रोकने के लिए प्राकृतिक प्रतिरोधों का तुलनात्मक अध्ययन [आर एफ आर आई / 8 / 2005–2008]

स्थिति : उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न भागों में बाँस की ग्यारह प्रजातियां एकत्रित की गईं, जो इस प्रकार हैं: बम्बूसा बाल्कुआ, बैम्बूसा लांगिस्पीक्यूलाटा, बैम्बूसा पैलीडा, बैम्बूसा पालीमोर्फा, बैम्बूसा टुल्डा, बैम्बूसा न्यूटन्स, डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनाई, डेन्ड्रोकेलेमस स्कीमेन्सिस, मेलोकाना बेसीफेरा, डेन्ड्रोकेलेमस जिगेन्टियस तथा बैम्बूसा बेम्बोस। एक मीटर लम्बाई में काटकर इनका भार रिकार्ड किया गया। शुष्कभार रिकार्ड करने के लिए इन्हें छाया में सुखाया गया। उनके आकार को रिकार्ड किया गया। इसके बाद चयनित स्थलों अर्थात् बर्नीहाट, जोरहाट तथा नागांव के परीक्षण खण्डों में जैव निम्नीकरण के विरुद्ध प्राकृतिक टिकाऊपन को जानने के लिए इन नमूनों को रोपित किया गया। प्रारंभिक अवलोकनों में बर्नीहाट और जोरहाट में साइजोफीलिन कम्प्लेक्स की उपस्थिति पाई गई। आवधिक मौसम विज्ञानी डाटा रिकार्ड करना बाकी है।

परियोजना 8 : आसाम और मीजोरम में कार्बन पृथक्करण के संदर्भ में बाँस प्रजातियों की संभावित भूमिका [आर एफ आर आई / एफ ई / 07 / 2005–2008]

स्थिति : आसाम और मीजोरम में कार्बन पृथक्करण के संदर्भ में बाँस प्रजातियों की संभावित भूमिका पर डाटा संग्रह किया गया। कार्बन पृथक्करण का मूल्यांकन करने के लिए आसाम और मीजोरम से बैम्बूसा टुल्डा तथा डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनाई के विभिन्न आयु वर्गों की जैवमात्रा का आकलन किया गया।



मीजोरम में जैवमात्रा आंकलन प्रगति पर

परियोजना 9 : डिप्टेरोकार्पस रेटुसस के बीजनाशी कीटों का जैवपारितंत्रिय अध्ययन [आर एफ आर आई / एफ ई / 12 / 2005–2008]

स्थिति : गिबबन वन्यजीव अभ्यारण आसाम में डिप्टेरोकार्पस रेटुसस के बीजनाशी कीटों का जैवपारितंत्रिय अध्ययन किया गया। एल्कीडोईड्स करेसस पोस्को (वीविल कोलिओपटेरा) इनामोनिया पुलवेरुला मेरिक तथा डायोरेकट्रिया एबीक्यूटेला डेनिस (लेपिडोपटेरा) को बीजों का नुकसान करते हुए पाया गया। प्राकृतिक खड़ों (स्वस्थानिक) में डी. रेटुसस का अंकुरण प्रतिशत 3–5% पाया गया। जो पौधशालाओं में 19.9% था। वनस्थलों से संग्रहित डी. रेटुसस के बीजों तथा भूमि पर गिरने से पहले नायलोन की जाली पर एकत्र किये गये बीजों पर थामन्यूगईड्स प्रजाति से होने वाली क्षति का आंकलन किया गया।

परियोजना 10 : आर्बस्क्यूलर कवक की विविधता और गतिशीलता तथा आसाम के कुछ औषधीय और सुरभित पादपों पर उनका जैवमात्रा उत्पादकता प्रभाव [आर एफ आर आई / एफपी / 10 / 2005–2008]

स्थिति : आसाम के आठ जिलों तथा मजुली उप प्रभाग से संबद्ध औषधीय तथा सुरभित पादपों पर आर्बस्क्यूलर माइकोरिजिल का जैवविविधता अध्ययन पूर्ण कर लिया गया है। संग्रहित नमूनों से माइकोरिजिल बीजाणु पृथक किये

गये और उनकी मात्रात्मकता तय की गई। जड़ीय रूग्णता प्रतिशत की गणना की गई जिसमें पाया गया कि ए एम कवक भिन्न मात्राओं में पादप को क्षति पहुंचाता है।



बन-हलोधी (करकुमा अरोमेटिका)



जोम लखुटी (कास्टस स्पीसिओसस)

परियोजना 11: गिबबन वन्यजीव अभ्यारण्य, आसाम में जैवविविधता संरक्षण के लिए वानस्पतिक संरचना का अध्ययन [आर एफ आर आई / एस सी / 08 / 2005-2008]

स्थिति : पारितंत्रीय गणना की गई तथा पादप समुदायों की पहचान की गई। कुल 152 पादप प्रजातियों की पहचान की गई और उनका प्रलेखीकरण किया गया। इस अध्ययन के दौरान गिबबन की फीडिंग हाईट 25 से 30 मीटर के बीच पाई गई। गिबबन सामान्यतः ब्रेकियेटरी को अपनाकर खाद्य, आच्छादन और विचरण के लिए वृक्ष छत्र के शीर्ष भाग का उपयोग करते हैं। अध्ययन में गिबबनों के रूचिकर खाद्य-पादपों को रिकार्ड किया गया। गिबबनों द्वारा मौसमीयता के अनुसार लक्षित पादप प्रजातियों को भी रिकार्ड किया गया।



गिबबॉन वन्य प्राणि अभ्यारण्य के सम-सदाहरित वन

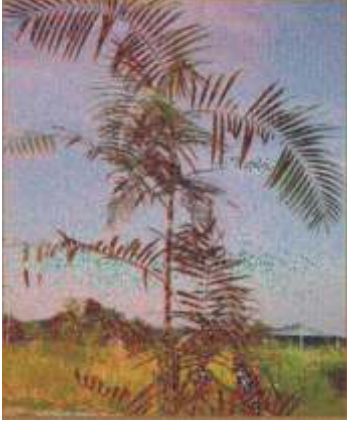
वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई नयी परियोजनाएं

परियोजना 1 : एक्वीलेरिया मेलासेन्सिस में अगर काष्ठ की संरचना की जांच [आर एफ आर आई / एफ पी / 11 / 2006-2009]

स्थिति : आक्रमित अगर वृक्षों पर विभिन्न आरक्षित वनों में सर्वेक्षण किये गये यथा: होलोगपार तथा सल्लाह रिजर्व वन तथा आमगुडी में घरेलू रोपणियां, नाम्टी, नहोरोनी, एलंगी, मेलामती, जालुकोनी, रोरियाह (रूपरी आसाम), अगर वृक्षों पर सबसे अधिक रूग्णता शिव सागर जिले में आमगुरी में रिकार्ड की गई जिसके बाद जोरहाट जिले में एलंगी में रूग्णता पाई गई। रूग्ण अगर वृक्षों के विभिन्न लक्षणों की पहचान की गई। विभिन्न अध्ययन स्थलों में अगर वृक्षों को छिद्रक जियोजेरा कॉन्फ़ीरेटा से आक्रमित पाया गया। कवक प्रजातियों अर्थात फ्यूसेरियम प्रजाति, राइजोपस प्रजाति, एस्परगिलस प्रजाति म्यूकोर प्रजाति तथा पेनीसीलियम प्रजाति को आक्रमित ऊतकों तथा छिद्रकों से पृथक किया गया। फाइलोस्फियर माइकोफ्लोरा पर किये गये अध्ययन से कवक की नौ प्रजातियों का पता चला। आर एफ आर आई के फील्ड स्टेशन नहोरोनी में अगर वृक्षों का कृत्रिम संचारण किया जा रहा है।

परियोजना 2 : चयनित बेंत प्रजातियों के प्रसार एवं संवृद्धि पर खोज [आर एफ आर आई / एफ ई / 10 / 2006-2009]

स्थिति : आसाम के जोरहाट, गोलाघाट, कारबी आंगलांग, डिबरूगढ़ तथा तिनसुकिया जिलों में बेंत की स्थिति का सर्वेक्षण किया जा रहा है तथा कैलेमस टेनुइस और सी. फ्लेजीलम के बीज खण्डों का सीमांकन किया जा रहा है। गिबन वन्यजीव अभ्यारण, आसाम के चयनित खण्डों से कैलेमस फ्लेजीलम के परिपक्व फलों को एकत्रित किया गया। सर्वेक्षण के दौरान सी. लिप्टोस्पेडिक्स, सी. नम्बोरेन्सिस, सी. लेटीफोलियस तथा सी. फ्लेफेलम को संग्रहित किया गया और बेंत स्थलों में रोपित किया गया।



केनटम की स्थापना



कैलामस टन्वीस के फल



कैलामस टन्वीस में पुष्पन

परियोजना 3 : थाइसानोलेइना मैक्सीमा (झाड़ू घास) के साथ बेजानस केजन नाइट्रोजन फिक्सिंग पादप के रूप में प्रस्तुत करके झूम खेती के कारण निम्नीकृत हुई भूमियों के सुधार के लिए प्रयोग में लाना [आर एफ आर आई / एफ सी / 09 / 2006–2009]

स्थिति : आसाम में थाइसानोलेइना मैक्सीमा (झाड़ू घास) के उगने वाले क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया और निष्पादकता परीक्षण के चयन मापदण्डों के आधार पर सर्वश्रेष्ठ रोपण सामग्री को एकत्रित किया गया। निम्नीकृत झूम खेती क्षेत्रों में रोपण के लिए पौधशालाओं में संग्रहित प्रकन्दों को सफलतापूर्वक बहुगणित किया गया।

परियोजना 4 : बेम्बूसा पलीडा के लिए पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण [आर एफ आर आई / एस एम / 07 / 2004–2008]

स्थिति : प्रसारण प्रोटोकाल के विकास के लिए आई बी ए के विभिन्न संघटनों का प्रयोग किया जा रहा है। 300-पीपीएम संघटन में अधिक पौध अंकुरण पाये गये। वृद्धि डाटा की रिकार्डिंग जारी है।



कल्म-कर्तनों पर आई बी ए घोल डालना



कल्म-कर्तनों में अंकुरण

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : ब्रह्मपुत्र नदी के मजुली प्रायद्वीप में उत्पादक भूमि तथा मुख्य वनस्पतियों का संरक्षण [आर एफ आर आई / ई पी / 05 / 2003–2006]

स्थिति : अनुमोदित परियोजना अवधि मार्च 6 में पूरी हो गई थी। किन्तु स्वीकृत सहायता अनुदान के अनुसार फन्ड न पहुँच पाने के कारण कुछ क्रियाकलाप पूरे नहीं किये जा सके। निधिकरण निकाय से परियोजना अवधि बढ़ाने का अनुरोध किया गया। इस संबंध में प्रतिउत्तर की प्रतीक्षा है।



मृदा स्थाईकरण के लिए उपचारित बांस से बन्द तथा मेटिंग और आइपोमिया रोपण

परियोजना 2 : मजुली में बांस आधारित वानस्पतिक तटबंध से मृदा और नदी के किनारों पर अपरदन नियंत्रण (भारत सरकार टी आई एफ ए सी / डी एस टी द्वारा प्रायोजित) [आर एफ आर आई / ई पी / 07 / 2004–2007]

स्थिति : ब्रह्मपुत्र नदी के किनारों और सतह पर स्थापित मृदा का कटाव रोकने के लिए बन्द बनाना तथा शून्य क्षेत्र में आइपोमिया की रोपणियां उगाई जा रही हैं। बांस, डलबर्जिया सिस्सू, थेस्पीसिया पॉपुलानिया, बाम्बेक्स सीबा तथा बेम्बूसा नाना की रोपणियां उगाने तथा नदी के किनारों के प्रथम, द्वितीय और तृतीय भागों में घास उगाकर ऊपरी मृदा के कटाव पर नियंत्रण किया जा सकता है।

परियोजना 3 : उत्तरी भारत में चयनित बांस प्रजातियों के सूक्ष्म वृहत प्रसारित रोपण स्टॉक का मूल्यांकन, परीक्षण तथा स्थानिक परीक्षण करना (डी बी टी, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित) [आर एफ आर आई / ई पी / 08 / 2005–2008]

स्थिति : उत्तर-पूर्वी राज्यों के कार्यक्षेत्रीय कार्यान्वयन निकायों के सभी आठ नोडल अधिकारियों से सम्पर्क रखा गया। ग्रोमोर बायोटेक, होसर तथा एच पी सी एल में बांस के युवा पौधों के 4600 ऊतक कल्चर स्थापित किये गये। विभिन्न एफ आई ए को कठोर टी सी पादपों की आपूर्ति की गई। लक्षित बांस प्रजातियों (बेम्बूसा बाल्कुआ, बी. न्यूटन्स तथा डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनाई) के प्रदर्शन और प्रायोगिक रोपणियों की स्थापना जिसमें विभिन्न उत्तर-पूर्वी राज्यों के 106 हे० के पूरे लक्ष्य में से 90 हे० क्षेत्र को लिया गया है। परीक्षण भूखण्डों में वृद्धि तथा निष्पादकता डाटा के विकास और मानीटरिंग तथा परिवर्द्धन मापदण्डों का मानकीकरण करना। विभिन्न उत्तर-पूर्वी राज्यों में स्थापित परीक्षण रोपणियों को मानीटरन करने तथा डाटा रिकार्ड करने का काम प्रगति पर है।

परियोजना 4 : देववन, आर एफ आर आई, जोरहाट, आसाम के वानस्पतिक उद्यानों केन्द्रों में परास्थानिक संरक्षण के लिए संरचनात्मक सुविधाओं में सुधार करना [आर एफ आर आई / ई पी / 09 / 2003–2007]



स्थिति : पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा आर्केडियम तथा शेड कम पॉलीहाउस के लिए स्वीकृत संबंधित निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है और सिंचाई पद्धति स्थापित कर ली गई है। इस संरचना का उपयोग, वानस्पतिक उद्यानों के निर्माणात्मक क्रियाकलापों के लिए किया जा सकेगा। उत्तर-पूर्वी भारत के वाणिज्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वृक्षों की 19 प्रजातियों, ओर्चिड्स की 39 प्रजातियों तथा औषधीय पादपों की 29 प्रजातियां तथा दुर्लभ और संकटापन्न पादपों की 12 प्रजातियों को वानस्पतिक उद्यान में स्थापित किया गया है।



उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की वाणिज्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रजातियां



फुटपाथ बनाने का कार्य प्रगति पर

शेड और पॉली हाउस में आर्चिड्स



परियोजना 5 : मेलिना आर्बोरिया पर केलोपेप्ला लियाना के प्रबंधन के लिए कीटरोगजनक कवक का संवर्धन : पारिसहायक पद्धति [आर एफ आर आई / 10 / 2005-2007]

स्थिति : सी. लियाना के विरुद्ध कीट रोगजनक कवक अर्थात् मेटारिजियम एनीसोप्लाई (2 केलोपेप्ला लियाना से पृथक्कृत (आर एफ आर आई/ई पी/04) तथा बांस पादप कूदक (आर एफ आर आई/ई पी/05) एस्परजिलस नाइजर (आर एफ आर आई/ई पी/06), ए. फ्लेवुस (आर एफ आर आई/ई पी/07) और ए. फ्यूमिगेटस (आर एफ आर आई/ई पी/08) (मृदा से पृथक्कृत) तथा बिवेरिया बैसीयाना (2 से पृथक्कृत राइस हिस्पा) (आर एफ आर आई/ई पी/02) तथा लेपीडोप्टेरन लारवा (आर एफ आर आई/ई पी/03) के साथ बी. बेसीआना से सकारात्मक नियंत्रण सहित सी. लियाना से पृथक्कृत (आर एफ आर आई/ई पी/01) का संवर्धन किया गया। सी लियाना के वयस्कों के विरुद्ध परीक्षण किये गये आठ कवकों में से आर एफ आर आई/ई पी /02 को अधिक रोगजनक पाया गया जिसके बाद आर एफ आर आई/ई पी/04, आर एफ आर आई/ई पी/05, आर एफ आर आई/ई पी/06, आर एफ आर आई/ई पी/03, आर एफ आर आई/ई पी/08, तथा आर एफ आर आई/ई पी/07, का स्थान रहा। किन्तु आर एफ आर आई/ई पी/01, जिसे सी. लियाना से पृथक् किया गया उसे अन्य कवकों की तुलना में अधिक रोगजनक पाया गया। मृत्युता का औसत प्रतिशत 60.92 के बीच रहा।

परियोजना 6 : संयोजित आर एण्ड डी प्रौद्योगिकियों के जरिये, उत्तर पूर्वी क्षेत्र की आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए अनुसूचित जनजातियों के लिए निरन्तर क्षमता वृद्धि [आर एफ आर आई/ई पी / 11 / 2006-2009]

स्थिति : अंगीकृत गांवों अर्थात् आसाम में ककोटीबारी और गोलाघाट का सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण किया गया। ग्रामीणों को शामिल करते हुए रजिस्टर्ड कोआपरेटिव सोसाइटी की स्थापना की गई। बांस/बेंत की रोपण तकनीकों तथा पौधशालाओं पर प्रशिक्षण दिया गया। लक्षित गांव में किचन गार्डन विकसित किये गये तथा सभी 65 परिवारों को विभिन्न वानस्पतिक बीज, पौधे तथा फलोद्यान प्रजातियां वितरित की गई। दो गोबर गैस सयंमों की स्थापना का कार्य प्रगति पर है। पन्द्रह मधुमक्खी पालन और मधुमक्खी बाक्सों का वितरण किया गया। मधुमक्खी पालन तथा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया।



बांस तथा बेंत पर प्रशिक्षण



मत्स्य तालाब की स्थापना



मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण



गोबर गैस संयंत्र की स्थापना

परियोजना 7 : काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क (घास भूमि) के घातक एलियन अपत्रण, मीमोसा इन्वीसा का जीवविज्ञानीय नियंत्रण [आर एफ आर आई / ई पी / 12 / 2006–2009]

स्थिति : जीव विज्ञानीय नियंत्रकों की प्राकृतिक उपस्थिति जानने के लिए काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क तथा अन्य क्षेत्रों में मीमोसा इन्वीसा का सर्वेक्षण तथा विश्लेषण किया गया। रोग ग्रस्त एम. इन्वीसा पादपों से कुछ कवक प्रजातियों को पृथक और परिशुद्ध किया गया। जैव नियंत्रकों को रूप में संभावित उपयोग के लिए प्रारंभिक प्रयोगशाला अध्ययन किये जा रहे हैं। एम. इन्वीसा को आक्रमित करने वाले एक कीट का पता लगाया गया। जैव एजेन्ट के रूप में इस कीट प्रजाति की क्षमता जानने के लिए प्रयोगशाला अध्ययन किये जा रहे हैं। इन्डियन टाईप कल्चर कलैक्शन, पादप रोग विज्ञान प्रभाग, आई ए आर आई, नई दिल्ली से कवक कल्चर प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं।



एम. इन्वीसा से पृथक्कृत फंगी



एन. इन्वीसा पर निर्भर कीट प्रजातियां

परियोजना 8 : आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण उत्तर पूर्वी भारत की मुख्य बांस प्रजातियों का आनुवंशीय सुधार तथा आनुवंशीय संसाधनों का संरक्षण [आर एफ आर आई / ई पी / 13 / 2006–2009]

स्थिति : सम्पर्क स्थापित किया गया और पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने त्रिपुरा, मिजोरम, आसाम तथा नागालैण्ड के राज्य वन विभागों से कृत्क परीक्षण के लिए समझौते पर हस्ताक्षर कर लिए हैं। कृत्क परीक्षण के लिए आसाम और मिजोरम में दो-दो तथा नागालैण्ड और त्रिपुरा में एक-एक स्थलों का चयन किया गया है। आर एफ आर आई जोरहाट (आसाम) तथा ए आर सी बी आर, आइजल (मिजोरम) में जीन बैंक स्थापित करने के लिए दो-दो एकड़ के भू-भाग लिये गये हैं। कृत्क परीक्षण और जीन बैंक के लिए कार्यक्षेत्रीय विन्यास तथा सांख्यिकीय दृष्टि से उत्तम रोपणों का अभिकल्प तैयार



किया गया है। सर्वेक्षण और चयन के लिए उपयुक्त पादपों तथा झुरमुटों को अन्तिम रूप दे दिया गया है, और उनके पासपोर्ट फार्मेट्स विकसित कर लिए गए हैं। ऊपरी आसाम और मनीपुर में बांस उत्पादक क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया है और लक्षित बांस प्रजातियों के उत्तम झुरमुटों का सर्वेक्षण किया गया है। रोपण स्टॉक बनाने के लिए बहुगुणन कार्य शुरू कर लिए गए हैं। मेलोकाना बेसीफेरा के विभिन्न परीक्षणों के लिए योजनायें विकसित कर ली गई हैं।

परियोजना 9 : काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क आसाम में और्थोपेट्रा का जैव विविधता अध्ययन [आर एफ आर आई / ई पी / 14 / 2006–2009]

स्थिति : काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क (के एन पी) में और्थोपेट्रा का प्रारंभिक सर्वेक्षण किया गया जिसमें कुल 11 प्रजातियां पाई गईं जिनमें से एक्रीडिड्स, टेटीगोनाइड्स तथा ग्राइलिड्स की एक-एक प्रजाति है। काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क में ये प्रजातियां सामान्यतः पाई जाती हैं यथा: आकजा नीटीडुला (वाक), एक्रीडा इकजाल्टाटा (वाक), डाइबोलोकैन्टोप्स फिंग्विस (वाक), कैटंटोप्स फेरुजिनस (वाक), एट्राक्टोमोर्फा क्रीन्यूलाटा (फेब), एलोपस थाल्सीनस (फेब), आकजा हाइला हाइला (सर्व) तथा अनाक्रीडियम फ्लेवीसीन्स (फेब)। दो प्रजातियां, वन भूमियों तथा घास भूमियों दोनों में पाई गईं।

परियोजना 10 : पूर्वी हिमालय क्षेत्र के पादप संसाधनों का मात्रात्मक भौगोलिक वितरण, मानचित्रिकरण तथा आबादी की स्थिति [आर एफ आर आई / ई पी / 15 / 2006–2009]

स्थिति : पद्धति विकास तथा अन्तिम रूप देने के लिए परियोजना अन्वेषकों की विचार-विमर्श हेतु पहली बैठक ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय शीलांग में 17 और 18 अप्रैल 2007 को हुई। साहित्य सर्वेक्षण किया जा रहा है।

परियोजना 11 : भारत में उष्णकटिबंधी प्रकाष्ठ तथा अन्य वानिकी मापदण्डों के लिए सुविधायें जुटाने, सांख्यिकी प्रक्रमण और प्रसार करने के लिए नेटवर्क की स्थापना करना [आर टीटीओ से सहायता प्राप्त तथा आई सी एफ आर ई देहरादून से संयोजित]

स्थिति : (1) संयुक्त वन सेक्टर प्रश्नावली जे क्यू 1 और जे क्यू 2, (2) प्रकाष्ठ/बांस ट्रेड बुलेटिन तथा (3) वर्ष 2004–2005 और 2005–2006 के भारतीय वानिकी सांख्यिकी से डाटा फार्मेट के बारे में अगरतला, (त्रिपुरा), आइजल (मिजोरम) तथा इम्फाल (मनीपुर) से सूचनायें संग्रहित की गईं।

सारांश : परियोजनाओं की संख्या

	2006–2007 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में शुरू की गयी परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	2	11	4
बाहरी परियोजनाएं	-	11	-
योग	2	22	4

शिक्षा तथा प्रशिक्षण

शिक्षा

वेल्स विश्वविद्यालय, बेंगोर, यू० के० द्वारा अगस्त 2006 में डॉ० अजय ठाकुर, वैज्ञानिक 'सी' एवं जैव प्रौद्योगिकी तथा आनुवंशिकी प्रभाग प्रमुख को पीएच डी की उपाधि प्रदान की गई।



सहानुबंध और सहयोग

उत्तर-पूर्वी राज्यों, विश्वविद्यालयों, अन्य अनुसंधान संगठनों यथा : जीबीपीआईएचईडी, एनएमबीए, एमओईएफ, डीबीटी, एनईसी तथा कार्यक्षेत्रीय वानिकी और वानिकी अनुसंधान से जुड़े हुए गैर सरकारी संगठनों से सहानुबंध और सहयोग स्थापित किया गया।

प्रकाशन

रिपोर्ट्स

1. विभिन्न पारिपद्धतियों के जैवविविधता पर आंकलन पर परियोजना की अन्तिम रिपोर्ट तथा काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क (आर एफ आर आई/ई पी/06) पी के खत्री (2007) जीबीपीआईएचईडी को देनी है।
2. आर एफ आर आई (आर एफ आर आई/ई पी/09) पी के खत्री (2007) ने वानस्पतिक उद्यानों/परास्थानिक संरक्षण केन्द्रों पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की रिपोर्ट प्रस्तुत की है।
3. भारत सरकार नई दिल्ली के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विज्ञान एवं सोसाइटी प्रभाग के तहत पर्वतीय पारिपद्धति में तकनीकी हस्तक्षेप पर आयोजित मानीटरिंग कम सेन्सीटाइजेशन कार्यशाला में प्रस्तुत परियोजना प्रगति रिपोर्ट, जिसका आयोजन एच ई एस सी ओ देहरादून द्वारा 25-27 सितम्बर 2006 तक बेथनी सोसाइटी केम्पस शीलांग में किया गया था।
4. वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट/आसाम में 18 सितम्बर 2006 को "वानिकी महत्व के नाशिकीटों और बीमारियों के जीवविज्ञानीय नियंत्रण" पर सेमीनार की मीटिंग रिपोर्ट आयोजित की गई जिसे भारत सरकार नई दिल्ली के विज्ञान एवं सोसाइटी प्रभाग, विज्ञान एवं तकनीकी विभाग द्वारा प्रायोजित किया गया था। करंट साइन्स, 92 (2) : 166-167.

विस्तार साहित्य

बांस के प्रसार एवं संवर्धन पर प्रशिक्षण मैनुअल तैयार किया गया

निम्नलिखित विषयों पर आसामी भाषा में पैम्पलेट तैयार किये गये :

1. आर्गेनिक कृषि का संयोजन: तकनीकें और अनुप्रयोग
2. स्वरोजगार के लिए आधुनिक बांस पौधशाला
3. वर्मी कम्पोस्टिंग : ग्रामीण रोजगार के लिए पारि-सहायक प्रौद्योगिकी
4. बांस का रासायनिक परिरक्षण : उपाय तथा तकनीकें

परामर्श

1. राष्ट्रीय वनीकरण एवं पारि-विकास बोर्ड, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा प्रायोजित वनीकरण एवं वृक्षारोपण क्रियाकलापों का मूल्यांकन जिसे आसाम के डिबरूगढ़ जिले, नागालैण्ड के मौन जिले, आसाम के गोलाघाट जिले, पश्चिमी गारो पहाड़ियों, एफडीए मेघालय, पूर्वी गारो पहाड़ियों, एफडीए मेघालय, तथा देवमाली जिला, एफडीए अरुणाचल प्रदेश में संयुक्त वनीकरण एवं पारि-विकास परियोजनाओं के अन्तर्गत आयोजित किया गया।
2. प्रोन्नत परियोजनाओं का मानीटरिंग तथा परिवर्द्धन जिन्हें, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, आयुष विभाग, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम और नागालैण्ड में भारत सरकार द्वारा सहायता दी जाती है।



सम्मेलन/बैठकें/कार्यशालायें/संगोष्ठियां/सेमिनार/प्रदर्शनियां

आयोजित

1. 18 जुलाई 2006 को आर एफ आर आई जोरहाट में वानिकी विस्तार पर एक दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला।



वानिकी विस्तार पर क्षेत्रीय कार्यशाला

2. 21 से 24 अगस्त 2006 तक आर एफ आर आई जोरहाट में बांस को प्रसार एवं संवर्द्धन पर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण।



बांस विस्तार और खेती पर प्रशिक्षण

3. 2 जून से 21 जुलाई 2006 तक अरुणाचल प्रदेश के एन ई आर आई एस टी के बी एस सी के पूर्व फाइनल के विद्यार्थियों को औद्योगिक प्रशिक्षण।
4. आर एफ आर आई जोरहाट आसाम में 18 सितम्बर 2006 को "वानिकी महत्व के नाशीकीटों और रोगों के जीवविज्ञानीय नियंत्रण की वर्तमान प्रवृत्ति" पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसे विज्ञान एवं सोसाइटी विज्ञान एवं तकनीकी विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया था।
5. आर एस आर आई जोरहाट में 22 नवम्बर 2006 को आठवीं आर ए जी बैठक।
6. 18 मार्च 2007 को मधुमक्खी पालन तथा प्रबन्धन पर प्रशिक्षण।
7. अरुणाचल प्रदेश में 19 मार्च 2007 को बांस प्रसार तकनीकों और संवर्द्धन रणनीतियों पर वन कर्मियों का प्रशिक्षण।
8. विश्व वानिकी दिवस (21 मार्च 2007) को आर एफ आर आई में जागरूकता कार्यक्रम।

सहभागिता

1. श्री ई. मेरू, भा.व.से., जीसी आर ने शीलांग में 26 अगस्त 2006 को उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में जैवविविधता संरक्षण के लिए स्व-आंकलन एन सी एस ए की कार्यशाला में भाग लिया।



2. डॉ० वाई सी त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'ई' ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय-क्षेत्रीय कार्यालय शीलांग में 18 और 19 सितम्बर 2006 को जैव विविधता पर राजभाषा तकनीकी कार्यशाला में भाग लिया। उन्होंने पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रलेख प्रस्तुत किया।
3. डॉ० वाई सी त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'ई' ने 27 अक्टूबर 2006 को जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग, नई दिल्ली में सूक्ष्म प्रसार अनुसंधान एवं तकनीकी विकास पर वैज्ञानिक सलाहकार समिति की तीसरी बैठक में भाग लिया।
4. श्री बी के पाण्डे, वैज्ञानिक 'सी' ने "वनीकरण के लिए स्तरीय रोपण सामाग्री" पर डिबरूगढ़ सरक्यूट में 6 सितम्बर 2006 को क्षेत्रीय कार्यालया रिसोर्स" पर्सन के रूप में भाग लिया।
5. श्री बी के पाण्डे वैज्ञानिक 'सी' ने वानिकी विभाग निरजुली-अरुणाचल प्रदेश द्वारा 15 और 16 दिसम्बर को "उत्तर-पूर्वी भारत की बांस प्रजातियां: ग्रामीण लोगों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए उपयुक्त संवर्धन तकनीकों का अनुकूलन" पर रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया।
6. श्री बी के पाण्डे, वैज्ञानिक सी ने डी आर डी ए सम्मेलन कक्ष जोरहाट में 2 मार्च 2007 को डॉ० जयन्ता माधव, सलाहकार, मुख्यमंत्री-आसाम (आर्थिक एवं वित्त) के साथ बैठक की।
7. श्री बी के पाण्डे, वैज्ञानिक सी ने जिला परिषद जोरहाट के सम्मेलन कक्ष में 27 मार्च 2007 को डॉ० तपन दत्ता, कृषि सलाहकार, मुख्यमंत्री आसाम के साथ बैठक में भाग लिया।
8. श्री बी के पाण्डे वैज्ञानिक सी ने 27 मार्च 2007 को "बांस के वाणिज्यिक संवर्धन" पर आयोजित सेमिनार में भाग लिया जिसे जिला कृषि अधिकारी जोरहाट द्वारा आयोजित किया गया था।
9. श्री डी गुरंग अनुसंधान अधिकारी ने जुलाई 2006 के दौरान कृषि विद्यालय आई जी एन ओ यू, नई दिल्ली में बांस और बेंत पर लेखकों की बैठक में भाग लिया।
10. डॉ० एन० सेंथिलकुमार, वैज्ञानिक बी ने भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विज्ञान एवं सोसाइटी प्रभाग के तहत हेस्को देहरादून द्वारा बेथनी सोसाइटी कैम्पस, शीलांग में 27 सितम्बर 2006 को वर्ग मानीटरिंग एवं पर्वतीय पारितंत्र पर प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप के बारे में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और डी एस डी परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।
11. डॉ० एन० सेंथिलकुमार, वैज्ञानिक बी ने 13 और 14 मार्च 2007 को निदेशक आर एफ आर आई के प्रतिनिधि के रूप में लाडोईगढ़, आसाम में केन्द्रीय सिल्क बोर्ड की 16वीं आर ए सी मीटिंग में भाग लिया।
12. डॉ० पी के खत्री, वैज्ञानिक सी ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय शीलांग द्वारा 18 और 19 सितम्बर 2007 को आयोजित जैवविविधता पर राजभाषा तकनीकी कार्यशाला में भाग लिया।
13. डॉ० डी० दत्ता, अनुसंधान अधिकारी ने 5 और 6 जून 2006 को प्रशासन स्टाफ कालेज, खानापारा, गोहाटी में भारत में वन आश्रितों के लिए सुअवसर खोलने संबंधी (अन्तर्राष्ट्रीय) प्रसार कार्यशाला में भाग लिया जिसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार तथा पर्यावरण एवं वन विभाग, आसाम सरकार ने टी ई आर आई तथा विश्व बैंक के सहयोग से आयोजित किया।
14. डॉ० डी० दत्ता अनुसंधान अधिकारी ने "पणधारियों के विभिन्न वर्गों की भागीदारी के संदर्भ में सांस्थानिक/संगठनात्मक प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए जे एफ एम के क्रियान्वयन से संबंधित औपचारिक और अनौपचारिक संगठनों के प्रलेखीकरण/भागीदारी" पर 17 जून 2006 को पर्यावरण एवं वन विभाग, आसाम सरकार, क्षेत्रीय केन्द्र एन ए ई बी, शीलांग मेघालय द्वारा प्रशासन कालेज, खानापारा, गोहाटी में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
15. डॉ० अजय टाकुर, श्री ए के सरकार, श्री एस बारडोली और डॉ० पपोरी शर्मा ने 11 सितम्बर 2007 को एएयू जोरहाट में बंगलोर जेनी द्वारा जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग पर एक दिन के प्रशिक्षण में भाग लिया।
16. डॉ० पपोरी शर्मा ने तेल उत्पादक पादपों के वृहत बहुगुणन पर आई आई टी गोहाटी में आयोजित छः दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया।

अवार्ड

इस संस्थान के श्री मृदुल साइकिया (खलासी, मोटर मेकेनिक) ने आई सी एफ आर आई की ओर से जयपुर में आयोजित 15 वें अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता (6 से 10 फरवरी 2007) में भाग लिया और भारोत्तोलन में कांस्य पदक प्राप्त किया।



प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. डॉ० टी सी दत्ता, माननीय मुख्यमंत्री आसाम के सलाहकार (कृषि) ने बांस प्रसारण और संवर्धन कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।
2. श्री डी एस तोमर, भा.व.से. प्रबंध निदेशक तथा श्री आर बी काला प्रबंधक (योजना), उत्तराखण्ड वन विकास निगम, देहरादून का 21 दिसम्बर 2006 को आर एफ आर आई में आगमन।
3. श्री के बी थाम्पी, आई जी एफ (एन ए ई बी) तथा श्री संजय कुमार, डी आई जी एफ (एन ए ई बी) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली का ए आर सी बी आर मीजोरम में 7 फरवरी 2007 को आगमन।
4. श्री आर पी अग्रवाल, भा.व.से., सी सी एफ आसाम ने 27 मार्च 2007 को आर एफ आर आई का दौरा किया।